नैक द्वारा प्रदत्त ग्रेड - 'A+'

प्रतिवेदन शोध समिति

आंतरिक आश्वस्ति गुणवत्ता प्रकोष्ठ के अन्तर्गत गठित शोध समिति पूरे सत्रभर शोधपरक गतिविधियाँ और कार्यक्रम करती रहती है। रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय से संबद्धता हेतु निरीक्षण टीम के आगमन के पूर्व डॉ. स्मृति शुक्ल प्रभारी शोध समिति ने महाविद्यालय के सभी प्राध्यापकों के शोध संबंधी अभिलेखों का नवीनीकरण किया। शोध संबंधी पन्द्रह महत्वपूर्ण बिन्दुओं की जानकारी लेकर शोध कार्य के अभिलेख तैयार किये गये।

नैक को भेजी गयी रिपोर्ट में शोध समिति ने अपनी भावी योजना के अन्तर्गत 'शोध प्रविधि' पर एक कार्यशाला आयोजन करने की मंशा प्रकट की थी।

इस भावी योजना को क्रियान्वित कर इस सत्र में साकार किया गया। यू.जी.सी. द्वारा स्वीकृत प्रस्ताव पर पच्चीस हजार की राशि प्राचार्य द्वारा स्वीकृत की गयी। दिनांक 11,12 मार्च को शोध प्रविधि एवं शोध के नये आयाम' विषय पर द्वि दिवसीय कार्यशाला का आयोजन प्राचार्य डॉ. उषा दुबे के मार्गदर्शन में किया गया। इस कार्य शाला का उद्देश्य शोध छात्र–छात्राओं को शोध प्रविधि एवं शोध के नये आयामों से परिचित कराना था। शोध कार्यों का उपयोग समाज के विकास में हो, शोधार्थी शोध कार्यों में मौलिकता और नवीनता का ध्यान रखें इन विषयों पर तीन तकनीकों सत्रों में विषय विशेषज्ञों के रुप में आमंत्रित वक्ताओं ने विचार रखे।

दिनांक 11.03.2016 को कार्शाला का उदघाटन डॉ. के.एल. जैन अतिरिक्त संचालक उच्चशिक्षा की अध्यक्षता में तथा डॉ. पी.के. मिश्रा अधिष्ठाता कृषि संकाय के मुख्य अतिथि में हुआ। प्राचार्य डॉ. उषा दुबे ने विषय प्रवर्तन करते हुए महाविद्यालय के प्राध्यापकों की शोधकार्यों के प्रति रूचि और लगन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि महाविद्यालय को नैक द्वारा A ग्रेड प्राप्त होने में प्राध्यपकों के शोध कार्यों का महत्वपूर्ण योगदान है। डॉ. के.एल. जैन अतिरिक्त संचालक उच्च शिक्षा ने कहा कि शोध कार्य मौलिक और गुणवत्ता युक्त होने चाहिये। आज शोध कार्य तो बहुत हो रहे हैं पर इनमें मौलिकता का अभाव है।

डॉ. पी.के. मिश्र ने शोध के नये आयाम क्या हो सकते हैं इस पर चर्चा की। डॉ. भूपेन्द्र निगम ने शोध छात्राओं को केन्द्र में रखकर शोध के विषय, शोध की आवश्यकता, शोध प्रबंध की रुपरेखा निर्माण तथा संदर्भ ग्रंथ सूची कैसे तैयार करें इन बिन्दुओं पर महत्वपूर्ण विचार रखे।

डॉ. पवन अग्रवाल, लखनऊ वि.वि. लखनऊ ने हिन्दी साहित्य विषय को केन्द्र में रखकर अपने विचार व्यक्त किये।

प्रसिद्ध वक्ता डॉ. अनिल ब्यौहार प्राध्यापक संगीत शास्त्र इंदिरा कला एवं संगीत महाविद्यालय, खैरागढ़ ने कहा कि साहित्य के इतिहास का पुनर्लेखन एवं साहित्यिक रचनाओं के प्रमाणिक पाठ हेतु शोध–कार्य किया जा सकता है। द्वितीय तकनीकी सत्र में डॉ. इंला घोष ने शोध शब्द को परिभाषित किया और कला और मानविकी विषय में शोध कार्यों को किस प्रकार किया जायें इस विषय पर अपने उपयोगी विचार रखे। डॉ. गार्गीशरण मिश्र मराल (प्रसिद्ध शिक्षाविद्)ने 'उच्च शिक्षा में शोध की आवश्यकता' विषय पर विचार प्रकट किये।

दिनांक 12.03.2016 को तृतीय तकनीकी सत्र "वाणिज्य, अर्थशास्त्र और अंग्रेजी विषय में शोध कार्य कैसे किये जाये" विषय पर केन्द्रित था। इस सत्र में प्रो. शैलेष चौबे विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय डॉ. सुनील पाहवा अधिष्ठाता वाणिज्य ने भी शोध–कार्य में स्तरतीयता पर बल दिया। डॉ. अरूण मिश्र ने 'शोध और साहित्य' विषय पर अपने मत प्रकट किये। डॉ. हेमंत तनकप्पयन प्राध्यापक अंग्रेजी ने 'अच्छे शोध–पत्र लेखन' पर अपना व्याख्यान दिया आपने MLA फार्मेट की भी जानकारी दी तथा शोध के लिये उपयोगी सर्च इंजन और वेवसाइट्स की जानकारी शोध छात्राओं को दी। चतुर्थ तकनीकी सत्र में डॉ. निशा तिवारी, डॉ. राजकुमार सुमित्र एवं डॉ. सुषमा दुबे के व्याख्यान थे। समापन सत्र में संगोष्ठी की संयोजक डॉ. स्मृति शुक्ल के सभी सत्रों के प्रतिवेदन का वाचन किया। इस कार्यशाला में लगभग दो सौ प्रतिभागियों ने भाग लिया। म.प्र. के विभिन्न महाविद्यालय के प्राध्यापकों एवं शोध छात्रों ने इस कार्यशाला में भागीदारी की। पंजीकृत शोध छात्राओं को शोध सामग्री (हैंड आउट्स) प्रदान की गई है। सभी वक्ताओं के विचारों को संकलित कर शोध प्रविधि पर एक पुस्तक प्रकाशित करने की योजना है।

इस कार्यशाला की समन्वयक डॉ. आशा पांडेय, आयोजन समिति के सदस्य डॉ. नीना उपाध्याय, डॉ. अर्चना सिंह, डॉ. अर्चना देवलिया यू.जी.सी. प्रभारी, डॉ. जे.के. गुजराल एवं डॉ. टी.आर. नायडू विभागाध्यक्ष [illegible]